ISSN-2348-3660

कलावसुधा

प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका

जुलाई–दिसम्बर, 2023

Peer Reviewed

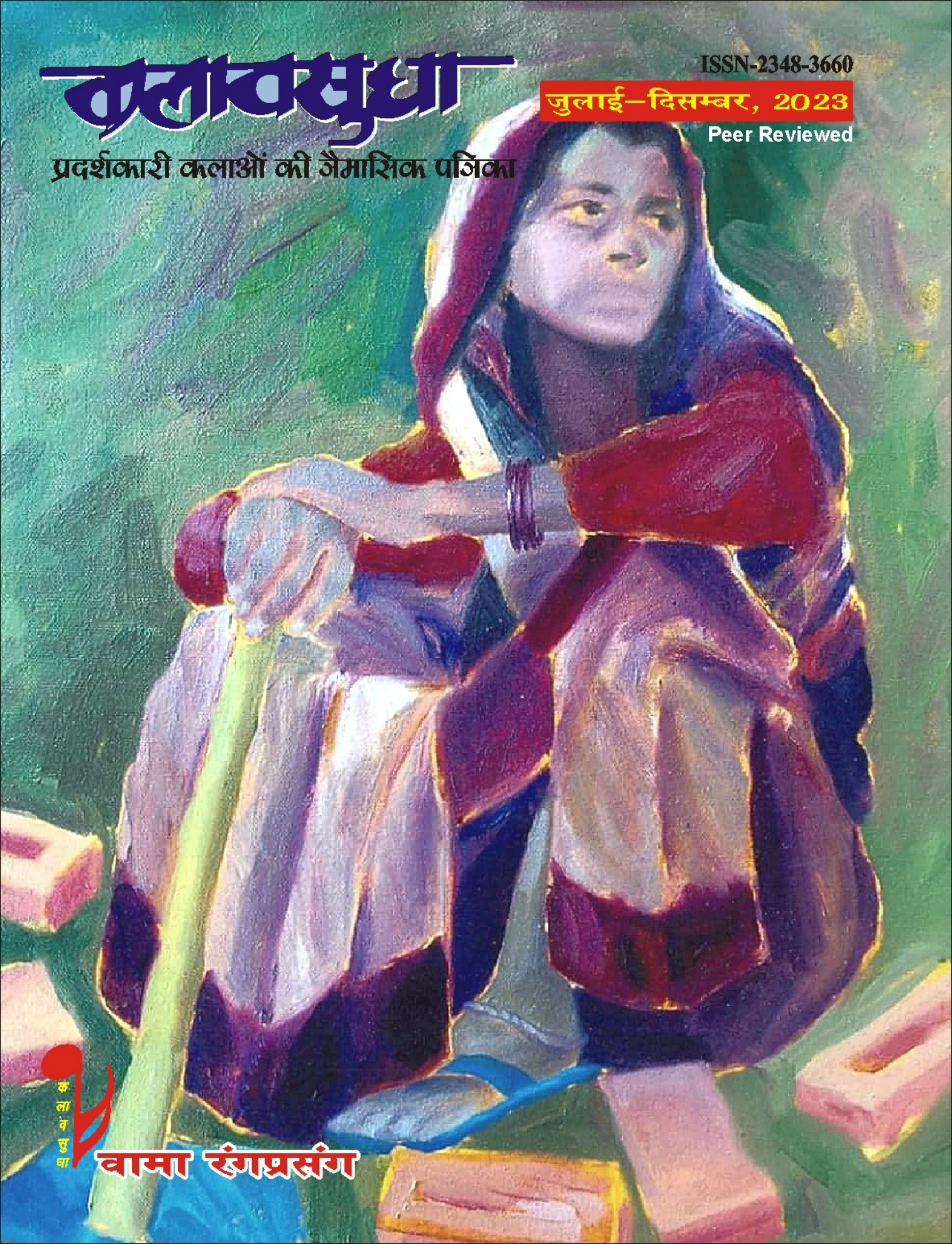

वामा रंगप्रसंग

कलावसुधा
प्रदर्शकारी कलाओं की त्रैमासिक पत्रिका
■ वर्ष : 23 ■ अंक : 41-42 ■ जुलाई–दिसम्बर, 2023
Peer Reviewed ISSN-2348-3660

वामा रंग प्रसंग

सिलसिला.....

कहना–सुनना 5

1.	रंगधूलि : स्त्री कलाकारों की जीवनगाथा	–डॉ. रेणु अरोड़ा	9
2.	साक्षात्कार : त्रिपुरारी शर्मा	–उमा झुनझुनवाला	11
3.	बीच शहर और शिफा दो अद्‌भुत नाटक	–गुलिस्ता एलीजा	19
4.	रूढ़ियों को तोड़ा और अपनाया क्रांतिकारी रंगकर्म	–जाहिद खान	22
5.	रंगमंच में स्त्री के लिए जगह	–राजेश कुमार	25
6.	नैतिकता अनैतिकता के प्रश्न से जूझते स्त्री पात्र	–डा. ममता धवन	28
7.	दिल्ली की महिला रंगकर्मी, खो गये नाम वाले कुछ चेहरे	–अनिल गोयल	36
8.	स्त्री पात्रों के माध्यम से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक चिन्तन	–अभिषेक कुमार	56
9.	संस्कृत नाटकों में नारी का स्वरूप	–डा. पत्रिका जैन	63
10.	स्त्री प्रश्न : साहित्य के बदलते स्वर	–डॉ. अलका पाण्डेय	66
11.	उर्दू ड्रामा और उसकी महिला किरदार	–सुहेल वहीद	69
12.	स्त्री तुझे अपने पास बुलाती है तेरी दुनिया	–शशांक दुबे	72
13.	दीप मनदीप	–हरबिन्दर कौर (बबली)	76
14.	विकास में महिलाओं की भूमिका	–राघवेन्द्र रावत	81
15.	महिला रंगकर्मियों की भूमिका	–कुशाग्र जैन	88
16.	महिलाएँ : एक परिदृश्य	–डा. गगनदीप	90
17.	अभिनय के माध्यमों का इंद्रधनुष	–गौतम सिद्धार्थ	93
18.	लौट रहा है रंगमंच	–दिनेश अग्रवाल	99
19.	बहुमुखी प्रतिभा संचयिता भट्टाचार्य!	–जयनारायण प्रसाद	105
20.	सांगीतों में महिला पात्रों का पदार्पण	–डॉ. बीरेन्द्र कुमार चन्द्रसखी	108
21.	शास्त्रीय और लोक कला के बीच सेतु की भूमिका	–अतुल यदुवंशी	116

22.	अपने शहरों में हिन्दी रंगमंच के नए आयाम गढ़ती आज की नारी	–मनीषा मल्होत्रा	120
24.	महिला रंगकर्मी–कार्य और योगदान : एक अध्ययन	–डा. चंद्रशेखर कणसे	123
25.	प्रो. गिरीश रस्तोगी : एक प्रयोग धर्मी निर्देशक	–निशिकान्त पाण्डेय	130
26.	आधी आबादी का योगदान	–योग मिश्र	132
27.	महिला रंगकर्मियों का अवदान	–डा. कुलिन कुमार जोशी	140
28.	होता है शब–ओ–रोज तमाशा मिरे आगे	–डा. निशा नाग पुरोहित	146
29.	मेरी नजर में महिला रंगकर्मी	–डॉ. रमा यादव	150
30.	महिलाओं की भूमिका	–डा. कुमार चैतन्य प्रकाश	154
31.	आपके पास कुछ और होना चाहिए जिससे आप अपनी जीविका चला सकें	–प्रतुल जोशी	159
32.	अपनी संस्कृति और सरोकारों के लिए	–बबिता पाण्डेय	165
33.	हिन्दी, पंजाबी रंगमंच की निर्देशिका परविन्दर कौर	–तरसेम	179
34.	बच्चों के लिए नाट्यकर्म में रत : बिशना चौहान	–डॉ. श्यामसुंदर दुबे	182
35.	सघन सृजनात्मकता की गंभीर आवाज सीमा शर्मा	–प्रवीन शेखर	184
36.	जो है बाबा आपका, रस्ता आप दिखाय बलिहारी गुरु आपकी, रंगमंच में लाय।।	–संजय श्रीवास्तव	186
37.	मेरे हरि हारिल की लकड़ी है थिएटर	–प्रवीण शेखर	190
38.	एक पूर्ण रंगकर्मी–चित्रा सिंह	–जयवर्धन	194
39.	महिला अभिनेत्रियां एवं रंग निर्देशिका	–ऋतंधरा मिश्रा	198
40.	महिला रंगकर्मी : एक समर्पित कैनवास	–डा. अतुल शर्मा	202
41.	रंगमंच की महिलाएं	–सुनील मानव	205
42.	धुन वाहन होती है जिस पर सवार होकर	–डा. ललित कुमार सिंह	208
43.	बहु आयामी अभिनेत्री : लुबना सलीम	–सलीम आरिफ	215
44.	स्वतंत्रयोत्तर के चार दशक का महिला रंगकर्मी	–गोपाल सिन्हा	219
45.	भारती शर्मा	–अखण्ड शर्मा	240
46.	'शून्य' से उभरती आवाजें	–डॉ. निशा नाग पुरोहित	245
47.	महिला कलाकारों की सहभागिता	–ललित सिंह पोखरिया	248
48.	रामदुलारी शर्मा–एक सफल रंगनिर्देशिका	–डा. राकेश कुमार	256
49.	निष्ठा की प्रतिमूर्ति–डॉ. निष्ठा शर्मा	–प्रो. अभय द्विवेदी	258

50.	हिन्दी रंगमंच में अभिनेत्री	–विभांशु वैभव	261
51.	सिग्मा देश की उभरती महिला रंगकर्मी	–अख्तर अली	263
52.	सुश्री प्रियंका शर्मा	–रजनी राव	265
53.	स्त्री जुविनाइल रंग कर्म की सुदीर्घ सक्रियता	–डॉ. गौतम चटर्जी	268
54.	'नाटक में वामा'	–दिनेश दीक्षित	270
55.	कुसुम कुमार का रंगकर्म	–डॉ. लहरी राम मीणा	272
56.	शुक्र हैं हम जिन्दा हैं	–डॉ. निधि अग्रवाल	278
57.	रंगमंच और महिला कलाकार	–यतींद्र चतुर्वेदी	284
58.	नाट्यशास्त्र एवं भारतीय ज्ञान परंपरा में स्त्री का महत्व	–ज्योति	288
59.	रंगकर्मी शौकत कैफी अब बाकी याद की रहगुजर	–जाहिद खान	293
60.	रंगकर्म के आइने में : 'चित्रा मोहन'	–डॉ. पुष्पा बरनवाल	297
61.	मोना लाइफ स्टोरी	–अमित कुमार सिन्हा	302
62.	ढाठनजी का किरदार	–कमलेश भाई बांगावाला	305
63.	A Star is Born Meet a theatre personality Meeta Mishra	–Rajni Rao	309
64.	Women in Bengali theatre (Residing outside West Bengal) -A conversation and interaction with Smt. Gopa Basu, stage actor in Delhi in many years	–Sanghamitra Chakravarty	316
65.	Harvinder Kaur. An Actress Par Excellence	–Sonamoni Jayant	319
66.	प्रतिक्रिया		321

प्रधान सम्पादक
शाखा बंद्योपाध्याय

सम्पादक
डॉ. उषा बनर्जी

सह–सम्पादक
डॉ. ज्योति सिंह

विधि परामर्शी
रमेश चन्द्र पाण्डेय
अजीत श्रीवास्तव

आवरण चित्र
प्रतिमा सिंह

व्यवस्था सहयोगी
देवाशीष,
पर्ण शिशिर,
ऋचा,
राहुल
रत्नेश

संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा आंशिक आर्थिक सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार सुरक्षित
पत्रिका के किसी भी अंश का मंचन प्रकाशन अथवा प्रसारण करने से पूर्व सम्पादक की लिखित अनुमति अनिवार्य है।

पत्रिका से जुड़े सभी व्यक्ति कला सेवा हेतु अवैतनिक एवं अव्यवसायिक हैं।

न्याय क्षेत्र लखनऊ

इस अंक का मूल्य 500/–

सम्पादकीय ठिकाना : कला वसुधा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग, लखनऊ – 226029
वेबसाइट : **www.kalavasudha.com** ई–मेल : **kalavasudha01@gmail.com**
मो. : 8052557608, 9889835202

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक डॉ. उषा बनर्जी द्वारा शिवम् आर्ट्स 512/569, दूसरी गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 'सांझी–प्रिया' बी–8, डिफेन्स कालोनी, तेलीबाग लखनऊ – 226029 से प्रकाशित।

प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे 'कला वसुधा' और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कहना–सुनना

सभी सहृदय सुधी एवं मर्मज्ञ पाठकों को सादर स्नेहिल यथायोग्य अभिवादन।

आप सभी के समक्ष यह अंक पुरुष की अर्थाङ्गिनी नारी या महिला रंग कर्मियों पर आधारित है। इससे पूर्व संगीत की ध्रुपद–शैली पर बृहद दो प्रसंग कलावसुधा ने आपके समक्ष प्रस्तुत किये। सभी लेखकों के सहयोग, आशा, उल्लास निष्ठा, लगन और विश्वास के साथ उन दोनों ही प्रसंगों को कलावसुधा प्रांगण में प्रस्तुत किया गया, परन्तु उस अनुपात में आप सभी कलाप्रेमियों की प्रतिक्रियायें न मिलने के कारण हम सभी को थोड़ी निराशा अवश्य हुई। मैंने अक्सर देखा है कि संगीत विद्या से जुड़े कलाकार अपनी साधना में इतने विलीन होते हैं कि वे ये मात्र औपचारिकता तक नहीं कर पा पाते। उन्हें सिर्फ अपने प्रयोगपरक कलात्मक प्रदर्शनों में मिली करतल ध्वनि ही पर्याप्त संतोष प्रदान कर देती है। सम्भवतः उसी की इहा के लिये वे दिन रात साधना भी करते हैं। खैर, पर हम सभी संगीत की इतनी दुर्लभ विधा पर हमारे सुधी लेखकों इन चिंतकों की अनुकम्पा से ये दो बृहद ग्रंथ सदृश प्रसंग आपके समक्ष रख पाये यहाँ हमारे सुधी लेखक अपने लेखन कार्य का कोई मेहनताना तक नहीं लेते न ही किसी से भी इस पत्रिका में लेख प्रकाशित करने का कोई शुल्क ही लिया जाता है उनके लेख की स्तरीयता ही एक प्रकार से सर्वस्व समझ कर हम पत्रिका में उसे स्थान देते हैं। इसके उपलक्ष्य में सभी पाठकों से आशा की जाती है कि इसकी सभी स्तरीय सामग्री संकलन के प्रयास को आप सभी अपने दो शब्दों से उत्साहवर्धन एवं सकारात्मक सलाह अवश्य दें ताकि हम और अधिक ऊर्जा के साथ इन कार्यों को गति प्रदान कर सकें। खैर कोई बात नहीं, हमारे कुछ सुधी कला प्राश्निकों ने अपनी मूल्यवान टिप्पणी पत्रिका के संदर्भ में प्रदान की है हम उसे ही पर्याप्त समझ कर आगे बढ़ते हैं।

अस्तु, यहाँ हम महिला रंग कर्मियों की आवश्यकता, उनकी भूमिका, उनके महत्व एवं उनके संघर्षों पर संक्षेप में चर्चा करने जा रहे हैं। महिलाओं के समक्ष जीवन की चुनौतियाँ पहले भी बहुत थी, आज भी है और हमेशा रहेगी ही जिनका सामना तो करना ही है चाहे जो हो। इनके उस संघर्ष के लिये मेरी कुछ पंक्तियाँ जो मैं महसूस कर पाती हूँ–

"प्रेम या भाव की, राग के उदभाव की,
बाँसुरी के सुरों में, कृष्ण के स्वभाव की,
राधिका के हृदय में,
बसे नव रस भाव की,
माँ के ममत्व की, या पिता के विभाव सी,
या इंद्रधनुषी रंगरंगी,
कल्पना के नृत्य सी,
या सुदूर गगन चीरती,
पंछियों की उड़ान सी,
या नदी के स्वच्छ सलिल में,
उषा के नव चित्र सी,
ऐसी या वैसी, बोलो न कैसी,
हो अनन्त रूपसी,
कृष्ण के स्वरूप सी,
या शिव के त्रिपुण्ड सी,
बाट हम जोहते,
क्या तुम हृदय का प्रणिपात हो?
या हृदय को पवित्र कर
तुम मन का सुप्रभात हो,
बाट हम निहारते हैं
तुम आदि शक्ति की श्वास हो,
हे नारी ! तुम पुरुष की
पूर्णता का अहसास हो।

शिव ही नटराज है नृत्य और नाट्य के साथ समस्त कलायें उनके ही हृदय का नवनतोन्मेष हैं। वो ही प्रकृति और पुरुष का विलास है। एक बार जब एक शिव भक्त ऋषि कैलाश जाकर शिव की परिक्रमा करने को तैयार हुए तो शिव के वामाङ्ग में पार्वती विराजमान थी। उन्होंने पार्वती की परिक्रमा करने से यह कहकर मना कर दिया कि इन्हें तो कभी मातृत्व सुख प्राप्त ही नहीं होगा, ऐसी अपूर्ण नारी की शिव के साथ मैं परिक्रमा नहीं कर सकता। पार्वती को जगत कल्याण के लिये ही किन्हीं कारणों से यह शाप रति ने दिया था। खैर, सभी देवों ने ऋषि को समझाया कि वो तो जगत जननी शिवा हैं वो शिव से अलग नहीं हैं पर ऋषि नहीं माने, उन्होंने शिव को पार्वती से अलग करके उनकी परिक्रमा का दुस्साहस किया। पर शिव महा कृपाल उन्होंने ऋषि की आशंका को दूर करने के लिये पावर्ती को अपने वामाङ्ग में समाहित करके वो अर्धनारीश्वर रूप में सभी को दर्शन दिये। यह एक प्रतीकात्मक आख्यान है जिसका अर्थ है कि प्रकृति और पुरुष द्वैत भी है और अद्वैत भी उसी में उसकी सम्पूर्णता है। कहने का तात्पर्य है कि शिव के बिना शिवा भी अधूरी हैं और शिवा के बिना शिव भी पूर्ण नहीं है। वो दोनों मिलकर ही सृष्टि का सम्पूर्ण स्वरूप रचते हैं। अतः उन्हें अलग करके देखना मूर्खता है। उनसे ही उदधृत और सुकुमार भाव प्रगट हुए, ताण्डव और लास्य का स्वरूप तैयार हुआ वही अंश हम समस्त प्रकृति में भी विराजमान हैं। वो अंश है और हम सभी उसके अंशी है तो हमारे हृदय में भी वही सब परिकल्पित होता है। जो शिव और शिवा का अंश है। उस परम शक्ति ने अपने ही रसों के आस्वादन के लिये प्रकृति को रचा और उसके माध्यम से भावों का आस्वादन लेते हैं और चूँकि यह मानव मात्र भी उनका ही अंश है। अतः उसमें निहित यह सभी सार्वभौम तत्व और रस भी निहित है। जब उनकी सौन्दर्य प्रवृत्ति का नववनोन्मेष होता है तो अपने ही